षष्ठ अध्याय

पाठकीय ठीकना और उपन्यास का रूप विन्यास
पाठ्यीय सैदना और उपन्यास का रूप विन्यास

साहित्य में वस्तु और रूप की वर्णनता का निर्विवाद हो गई है। वस्तु: जो वस्तु है वही रूप है और जो रूप है वही वस्तु है। वस्तु की आकार परामर्श करने के लिए कोई न कोई रूप से नहीं भूमिका रूप के अभाव में वस्तु का विवरण नहीं होता। साहित्य की बजाय धर्म विवाह योग्य होती है और उसका कारण क्षण रूप होता है। कहानी की वस्तु उपन्यास के रूप में, और उपन्यास की वस्तु की कहानी के रूप में नहीं ढाला जा सकता। कहानी की वस्तु उपन्यास की वस्तु से पिन्ह होती है हथियार उसका रूप भी अलग होता है। वस्तु की भिन्नता के कारण ही कविता में शब्दों का बिंदु बदलता होता है क्या साहित्य में उतना नहीं होता। पिछले में हम एक स्थान पर रहित हैं कि काव्य का निर्माण शब्दों द्वारा होता है। हम अर्थ है कि निवारण शब्दों में कवक नहीं कवक कहीं भी नहीं रहता। इतनी गहरी शब्द के लिए क्या साहित्य में अध्ययन नहीं रहता। अब, उसके रूप की सहज में ही पूर्ण किया जा सकता है। काव्य के लिए गतिबढ़ियाँ ने भी बुझ देता ही सीता किया है -"वा गायें लम्पूरू..."

पिछले काव्यावृत्तियों में देखा जा चुका है कि उपन्यासों की वस्तु पर पाठ्यीय सैदना का न्यूनताप्रमाण प्रभाव पड़ता है। पाठ्यीय सैदना कोई दूसरी वस्तु नहीं है जो कहीं न कहीं दूसरे पृष्ठ नहीं है। शिक्षकों का नाति पुंज का पाठ्य के प्राकृतिक दृश्य वाली की वातमात्मक किसे रहता है हथियार वह अपने धार्मिक आधार में उसी को दुख़ता है। काव्यीकर्म है शीर्षक वाला तो जाने दोजिए, काव्यीकर्म साहित्य में भी वह उसी को दुख़ता है। उसमें यह वह उन प्रश्नों का सौंप निकालता है जो उसकी जीवनता
स्मृतियाँ के भेद में होता है। वीन्दृर, दृष्ट, वादि खूब ऐसी वातें होती हैं जो दुनियादी तौर पर बहुत कम बदलती हैं, हरिछुए उनकी दोहरकर श्रेष्ठ वातों में पाठक समावासित था का वर्णीण करता है। काफिलाद, खूबीदास वाचे के गुनों का इस दृष्टि है वर्णीण रूप में भी गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि नये युग की समस्याओं साहित्य के लिए विशेष महत्व रखती हैं।

टॉसक दर्शन ने साहित्य में समावासित का पता पर विशेष बल दिया है। अपने स्पष्ट शब्दों में बताया है कि ऐसे और वातावरण वोनों का समावासित समस्याओं के व्यवस्था विविधता है।

वस्तुं: खूब समय के बाद जब खूब बदल वाता है पुराने शब्दों के अर्थ पिछ जाते हैं, बन्द मटिस्ता हो जाता है, अंगित अपनी अनुभूति हो जाता है। ऐसी स्थिति में नया साहित्य का शब्दों की नवीन सन्दर्भ देता है, नये बन्दों की फुर्स्त करता है और अंगित को नये रागों के विषयादि करता है। इस प्रकार की नवीनता वह वानकुल करके नहीं है जाता बल्कि इसके पीछे है विलिम की अविनाय पानी होती है। तुलसी का यह परिवर्तन पीढ़ी पर पीढ़ी चलता रहता है। इस क्षेत्र में हारू रूप का महत्व प्रमुख है - क्रेका को निरन्तर नया बनता रहता है। इसका आभास क्रमांक आश्वयत पर आपातिक है। जब प्रतिदीपिकारण की ताजगी निश्चित हो जाती है तब पाठक अपनी विनियमन में लो जाता है। यहाँ पर हारू रूप ने जिस आश्वयत्त तत्व पर बल दिया है वह बहुत संगत ग्रीष्मी नहीं होता, क्योंकि आश्वयत्त तत्व अपने आप में महत्वपूर्ण नहीं है। इस तत्व के जायलग पर

6. "...rt always must be renewed. Its creative influence depends on surprise when ones the freshness of the presentment has faded, the reader relapses into his daily habits."

Dr. H.V. Rauth - English Literature and ideas in the twentieth century, page-2.
प्रायः की तेरा बहुत दिन तक टिक नहीं पाते। नसीनता का सम्बन्ध नये युग की सीमा नहीं है। उसमें आस्था तत्त्व का पहल न होकर टकर पा का अविक है फिर वह आस्था तत्त्व और टकर पा का क्या है? यहीसे न कि हमने अपने में नहीं अनुभवितों की अभिलाषा सम्पन्न नहीं। यदि अनुभव नहीं है तो उसका स्पष्टक नया होना ही चाहिए। यही खिलाफ़ में वह भी विचार कर हैना आवश्यक है कि पाठकीय शीन्ना और उपन्यासों के रूप से विचार में व्या क्षेत्र है? इसके सम्बन्ध से हमें विशेषता करना यह नहीं है। यह कहना शायद कि पाठकीय शीन्ना के फ़ॉलस्कुप तेरा अपने उपन्यासों के रूप से विचार में परिवर्तन करता है, व्याख्या है। वह पाठकीय शीन्ना की अनुभूता और अविक है आर्यक रूप है भ्रामित हो सकता है किन्तु वह अर्थ है की वह उसका कारण की बजाय का अनुभूत नहीं करता। पहले ही विशेषता किया जा चुका है कि प्रस्तुत पाठकों की शीन्ना और सुधीन भैलता में एक स्तर की समानान्तरता होती है। ऐसे दोनों को फलस्ता है, वह उसके अनुकूल होकर न तो हिंदी वंशों में क्या भी होता है। वह अपनी रचना की नया स्पष्टक देकर पाठकीय शीन्ना की विशेषता है वे करता है। यहाँ तक पाठकीय शीन्ना और युग भैलता का दोनों के एकाधिक का सम्बन्ध है उपन्यासों का रूप विचार हुने प्रभावित कार्य होता है।

हिंदी उपन्यास के चौथे में प्रसंग एक ऐसे उच्च रिश्ते है, जहाँ है बड़े होकर हिंदी उपन्यासों की पाठकीय शीन्ना और उसके रूपसे के सम्बन्ध में दुधिया अद्वित्त परिवर्तन किया जा सकता है। इस उपर खुला है बड़े होकर हमें प्रसंग के पूरे के उपन्यासों की गतिविधियों स्पष्टतः पाठकीय हो जाती है। प्रसंग के समय में उपन्यास के रूपसे में वे परिवर्तन अध्ययन उसके लिए बहुत कुछ नहीं शिखा विशेषता है। सन १६३७ के देखर सन १६४० के समय में बहुत तेजी के साथ परिवर्तन अध्ययन है। इस परिवर्तन के मूल में भ्रामित है प्रकार की पारस्परिशालियां और प्रभाव किया जाते हैं। यदि प्रसंग बढ़े के पाठकों
है प्रस्तावदार पाठक की धृतना की जाय तो बड़े रोचक निष्कर्ष निकलेंगे।
हस्ता गतिव यह नहीं है कि वाज देवकीनंदन स्वी, और गहरी के पाठक
नहीं चित्रित हैं। वे वाज ही हैं। उन्होंने वे विगत न्यूज़ के अवशेष ही हैं।
उनकी खैदिया को वाज की खैदिया नहीं माना जा सकता है। और उनकी
खैदिया है वाज के उपन्यासों के पुनरावृत होने की वात तो सीखी नहीं
जा सकती।

परिव श्रेष्ठ ने कथा साहित्य संस्था अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ दकी
प्राकृतव आफ़ फिक्सन उपन्यास के विन्यास में हैलीय पुरूषकोण
(प्याँबुर आफ़ यू) को सार्थक महत्वपूर्ण दिया है। हैनरी हेम्स ने
इसी का "निरीक्षण विन्दु ( पांसट आफ आवर्तक)" कहा है। पुरूषकोण
या निरीक्षण विन्दु की निर्मिति बहुत कुछ हैली के द्वारा और उनकी पहलु
पर निर्माण करीता है। यह पुरूषकोण वैयक्तिक होते हुए भी, वैयक्तिक
होता है। टीवीसी इंडिया ने अपने प्रस्ताव "विन्दु उपन्यास एंड इंडियनकुक
टेलियंगट" में वितरित करता पर बहुत बोर दिया है। फिर भी वह वैयक्तिकता
को स्कृति सारिरक नहीं करता। भारतीय साहित्य शास्त्र में इसी को अपने
दंग के सार्वभौमिक कहा गया है। निर्माणकला या सार्वभौमिकता
जनमानस के वाज हैली के सार्वभौमिक के अवधार और कुछ नहीं है।
पाठक की खैदिया जनमानस की ही खैदिया है। ऐसी स्थिति में पाठक की
उपेक्षा कहीं की जा सकती। उपन्यासों के लिए तो हीक वैनिया का और
भी अधिक पहलु है। इस पुस्तिका का निर्माण स्कृति विशेष फ़ाकर के वर्ग की
समस्याओं को लेकर के ही द्वारा। पिछले आयोगों में इसका स्वतंत्र उत्कृष्ट
किया जा सकता है। यहां पर केवल यही कहना है कि हैलीय पुरूषकोण के
निर्माण में बान-अन्बाने पाठक की खैदिया स्वयंसेवा रहती है। उपन्यासों को भीनि भीनि कहीं धारण के पीछे पाठक
को स्वयं स्वीकार नहीं किया जा सकता।

वस्तुइं: वाङ्कङ्क और पाठक के सामने कितनी कृति का रूप ही रहता है, इस तक्ष की व्याख्या करते हुए मार्ख शारीर ने लिखा है कि रूप ही कितनी वस्तु की कथा में परिणामी लगता है, जब वस्तु कितनी रूप से नहीं होती तब वह अनुभव तब ही सिद्ध होती - कथा है कथमुक्क। कथा के रूप में हाल की गृहण किया जाता है जब यह व्याख्यित वस्तु व्याख्यित होती है। शारीर ने वस्तु, अनुभव, शिल्प वादियं को स्थ की नाम दिया है - तकनीक। जब हम यह देखते चाहेंगे कि पाठकीय मिलना है और जीवनांतर तकनीकर के क्या संबंध है।

फ्रेंचस्की-पूरा उपन्यासों की कवरूप करते हुए पाठकीय मिलन और उपन्यासों के संबंधों का उल्लेख किया गया है। यदि उन उपन्यासों के छपे की ओर भ्यान दिया जाये तो उसी को बाहर विद्यमान संग्रही। उपदेश की प्रयाणता और मनोरंजन की क्रिया। दूसरा उपन्यास कार्य के चरित्र का परिष्कार करना चाहते है और दूसरा का छपे पाठकों का मनोरंजन करना या। एक उपन्यास की पुरुषिता में लिखा गया है - "हिंदी साहित्य में उपन्यास के प्राय: दो ही व्यवस्था स्मरित है। एक तो मनोरंजन करता और दूसरे उच्च भाव या आदर्श प्रदर्शित करता।"

9. Modern criticism through its exacli: scrutiny of literary texts, has demonstrated with finality that in art beauty and truth are indivisible and one. The Keatsian overtones of these terms are mitigated and odd dilemma solved are m for beauty we substitute form, and for truth, content; we may without risk of loss, narrow them even more, and speak of technique and subject matter. Modern criticism has shown us that to speak of content as such is not to speak of art at all, but of experience; and that it is only when we speak of achieved content, the form, the work of art as a work of art that we speak ascritics. The differences between content, or experience and achieved of art its technique."

— Mark Schorer; Technique as Discovery, in 'Forms of Modern Fiction', page-9.

2. ब्रजनाथ सहाय - शाखा चीन, (भूमिका और - कविताराम)
ठाला की निवासदाय, ब्रह्माम फिल्सैरि, वालकृष्ण मदत, रामकृष्ण दास, लक्ष्मीनारायण मेहता आदि पहले प्रकार के उपन्यासकार थे तो तैयारी की हुई, गौराण्डराथ गहरायी आदि दूसरे प्रकार के। कृष्णी ठाल गोस्वामी की स्थिति इन दोनों के बीच की मानी जा सकती है।

ठाला की निवास दास ने "परिसरा गुरु की पुराणा में निंदा है - "इस पुस्तक के रचने में मुझे महामायातारिद, संस्कृत, सुचिकर्ता वैगेरे फारसी, स्पेनिस्ट, लाइ बैक, गोल्ड स्कूल, विभिन्न क्षेत्र आदि के घुमने लेंगे और स्की बौच आदि के कविताओं में कहीं सहायता मिली है। हें जब होगी ने परिसरा गुरु पूजा है उन्हें कहीं नतीजा यह है कि पुरा उपन्यास शिशु-प्रद उगरों के मारा फूड है। नाना प्रकार के उदारों के उपन्यास की आवश्यकता करने का पाठ यह है कि तेजस्वी पत्तों के अभिलक्षित परिसर की जोर के विशेष रूप के हैं उन्हें है। इस प्रकार की प्रभावी वालकृष्ण मदत के उपन्यासों में भी देखी जा सकती है।

तिलकी जानवी उपन्यास पुस्तक: तिलकी उपन्यासों का लघु पाठकों का लघु मनोरंजन करता था। देशी स्थिति में उनमें घटना और कल्पना की प्रशंसा स्थान मिला। इसका हर पाठकों की कुछत्व बुद्धि को पुष्प करना था। इसके लिए केवल कवि न कह सकता था कि तिलक धारबुवा के समान चित्रक था। वे बाहुमूल घटनाओं और रामायणकारी तिलकों की भावत्किरिकुटिम स्थिति की जाती। देश के इस स्तर के कारण तिलकी उपन्यासों का विनाश एक जीर्ण जीर्ण हो गया। यही उपन्यासों में कोई न कोई संगीत सम्पन्न रूप से राजस्वार फिल्सैरि देश भी। कोई राजस्वार उक्ती और वास्तु होगा, उक्त का प्रतिक्रिया में ही कोई न कोई छपाता का स्थिर किया गया जाना वास्तव है। फिर तो राजस्वार की प्रकाश करने के लिए वहुत कारिगर में निपुण दोनों के देशवास एक दूसरे के विरुद्ध क्रियाशील हो उठते हैं। कथाक का निकास देशवास ने कार्याचार्यों के पाल-प्रतिपाल के
फलस्वरुप होता है। कपी उपन्यासों में बहुत कोठरिया, तबलाने, रहस्यमय रिसालता वाक्यकृति उपाय विलास पुत्र है। अन्ततः वर्णी राजकृष्ण विजय के ब्यूह को लोड़ता है और राजकुमारी के संवाह करने में समय होता है। स्मरण रखना चाहिए कि तिलक के उपन्यासकार ने परम्परागत नैतिकता का हृदया व्याख्या रक्षा करता है। संवाह अब राजकुमार क्षे होता है जिसकी और राजकृष्ण वाक्यावली होती है, जो भारतीय कला के मेल में है। दक्षिण का अपने दुष्ट कार्यों के साथ विभेद मधुमता पुर्द्रता के पीछे "वडो" करने वाला राजकृष्ण वाक्यावली का स्मरण करना चाहिए। भारतीय स्वतंत्र शासन की परम्परा के बारे में विशेष कर फास का उल्लेख किया गया, इसके इसकी दक्षता बेड जाती है।

देवकीनंदन कृष्ण का अपने सय के पाठ्यों की स्पष्टि का बच्ची तरह है पता था। उस सय के पाठ्य कभी पूरे निश्चय था, उसकी सामाजिक जितना का विश्वास नहीं हो पाया था। अपना दैनिक काम करते करते उसे अपने राजकृष्ण बी का स्थान चेतना बढ़ाते हैं। दैनिक स्थिति में भर्ता भाषा में लिखी कई कृताश्रम का स्थान अपने अपने मनोरंजन के लिए वापस है। कृष्ण की ने सक स्थान पर रिलाक्स है - "नियत सय में चन्द्रकान्ता तिलक की वारिस की थी उस सय कविता का प्राप्त नाम और परिष्कार अवश्यकताओं व्याय अपने वारिस एवं अपने कवितावाणी ने... उस सय हिंदी के क्षेत्र थे पर ग्राहक नहीं थे, इस सय ग्राहक है पर लेने नहीं है।... पुकार हस वात है बहुत हर्ष है कि में विषय में सफल हुआ और तुर्की ग्राहकों की बच्ची क्षेत्र है। पुकार हस वात है लज्जा पर प्रकट है कि चन्द्रकान्ता पूर्व के लिए वह दुर्दृष्टि नागरी की वर्णमाला सीखते हैं और फिर बनी हिंदी सीखना तथा उन छोटे व लेखों के पी इसके लिए हिंदी सीखी।" देवकीनंदन

-----------------------------
1. देवकीनंदन कृष्ण - चन्द्रकान्ता संजय - 28मांग, पृ 2050-59
लगी के उपन्यासों के श्रेणि विन्यास में जहां कहीं कथानक में उठना मालुम पड़ी है वहां के पाठकों को धीमे संबंधित करने लगते हैं। १००० नयाौं रस्तों की ओर पाठकों का व्यथा बाकूः करते हुए उन्हें अपना विश्वासपात्र बना के हैते हैं। १००१ पाठक, वह सब के आया कि जाप भी चलकान्ता और डूंगर वीरर्णजिवेंध की भुज होते देख बुझ रहे हैं। यह तो जाप सँकेत के हो गए कि महाराज जयवर्धन विजयवर्द्धन की स्वतंत्र होकर बुझ जाती है और वहां से राजा जयवर्धन और जयार को साथ देकर जयारी दिखाने की उम्मीद में लिखने लोह के बन्दर जातीं। जाप की यह भी याद होगा कि विद्रोही योगी ने तब कहा (लोह) के बाहर होते जब जयार की कह दिया था कि जब तुम अपने पिता और महाराज जयवर्धन को देकर इस लोह में जाना वो उन लोगों को लोह के बाहर बाहर बाहर पहले तुम आकर उस दफ़ान फिर हमें निल्ला जाना। उन्होंने कहे यह उल्काक्क जयार करती। १००२ यह लोगों की ती साथ अपने काम में क्षुर्ष दीनियाँ और दोही देर के लिए आधे बन्द करने ज्यारे उस लोह में बचाने और दिखाने में बचाने के राहते वालों की बात की फर्सत नहीं। १००३ शायद जाप लोगों के जी की प्रभु कर्ता निकल जाये और बुझने तथा तीर्थने हिस्से के दिखला देनों की बातें वो सुनते ही झुनते में कुछ जारे बाल्कुल बुझी भी हारक रहे।

वस्तुतः इस युग के उपन्यास की जीवन की वास्तविकता है विन्यास प्रत्यक्ष विच्छेदन न है। इस विच्छेदन का कारण यह हुआ कि उपन्यास की कार्यरत वार्तालाप के होते। कार्यरत के कारण कहीं तो उपन्यास की वार्तालाप की बंद गाथियों में चक्कर लगाने को और की स्वीकार हुजूम में विच्छेद के अनुशासन के अनुसार महाराज बाहु हुजूम करने लगे। प्रेमचंद ने महाराज किया कि हिन्दी का कथा साहित्य सुलभ हो जा रहा हुआ और कहानियाँ है। उन्होंने फिर पिढ़ा युग की कभी पार किया है उसे जीवन के कोई मदद न था। ज्यारे
साहित्यकार कल्पना की दृष्टि से ही कहीं वह फिर से बात करता है जो कि वह बात बखूबी से कहता है या कहीं वह बात करता है जो कि वह बात बखूबी से कहता है। इस समय वह बात करता है जो कि वह बात करता है जो कि वह बात करता है।

क्षण का जीवन से कोई व्यावस्था है जो कि वह बात करता है जो कि वह बात करता है। दोनों परस्पर विरोधी वस्तुएं वस्तुंगी जाती हैं। प्रेम का यह चरम जितना विलयस्य उपन्यासों के संबंध में हैं। उतना उनके दृष्टिन्य पूरे युग के उपन्यासों के संबंध में हैं। इसलिए वादशाही उपन्यासकारों ने पुराने वादशाहों को सुधारे द्वारा रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया। लेकिन यह काल्पनिक है जिसके वजह से कोई धार्मिक अंश नहीं है। यह कारण है कि उन्हें बेहतर धार्मिक है कि कह लें।

इसलिए उन्हें नहीं कहा जा सकता कि उन्हें जीवन से कोई मलबार न था लेकिन यह कह सकता है कि जीवन हैं मलबार रखते हैं विधायों के यथार्थ हैं उनका कोई मलबार न था।

इसी तरह प्रेम संद के दृष्टिन्य में उपन्यासकार शैली की कल्पना मिलती है। की दृष्टि में ही महत्त्वपूर्ण बनते जा सकते हैं।

प्रेम संद पहले कथाकार हैं जिन्होंने हिंदी उपन्यासों को यथार्थता दे दी है। आदर्शशास्त्री प्रेमवंद भी हैं। वे दूसरे दिनों तक वे भी सुनवारों के चक्कर में पड़े रहे, किन्तु उनके वादशाह और उनके दृष्टिन्य उपन्यासकारों के आदर्शों में दुनियाँकी अन्तर है। प्रेमवंद का आदर्श यथार्थता की उपेक्षा नहीं करता। वह उनके उपन्यासों को खाली स्वागत किया। कहाँ कह लें जो कि स्वागत तो पाठकों ने देखी नहीं, और गोपालपुर गोमती का भी देखना या लेकिन प्रेमवंद के पाठक भिन्न कोई के यह वे साधारण मात्र नहीं थे, उन्हें दुनियाँकी स्वागत कहना चाहिए। प्रेमवंद के पाठकों का अंतिम श्रद्धाशीता है लगाव और वे उस युग की समस्याओं को जिन्हें वे स्वयं महसूस कर रहे थे सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं, साहित्य और कुछ कृतियों में प्रतिफलित दिखाना चाहते थे। ऐसा स्वागतिक नहीं था। क्योंकि इनमें है कोई युग बेतना है।
सम्पूर्ण रक्षक मुल्यवान नहीं हो सकती थी। प्रेमचंद ने अपने युग की सम्पूर्णता में देखा, देश कहाँ बहुत सही नहीं है। युग के समस्त लीलावत के उन्नति अनुसार किया और मीठा। यहां पर प्रेमचंद का पाठक भी युग के सामने प्रेमचंद की ही माति कहीं छुड़ और कभी विन्या की छुटा ये खड़ा दिखाई देता है। अपने समाजस्वरूपी जीवन में प्रेमचंद बहुत गहरे अर्थ में सम्पूर्ण थे, हलावह उनके उपन्यासों में पूरा युग बैठे रुपेयों में अभिव्यक्त हुआ है।

उपर कहा बा चुका है कि प्रेमचंद ने साहित्य के जीवन की यथायथ हैं सम्बद्ध किया हलावह उनके उपन्यासों की परास्त्रियता। उपन्यासों की परास्त्रियता है तिन्हीं। फिकसी और जापुरी उपन्यासों में तिन परास्त्रियता का भिन्न हुआ है के देखने में जटिल मार्ग सड़कों हैं। इन्हे उनकी जटिलता घूमना बाहर है। उनमें हुए हर पत्र किसी न किसी जापुरी तद्वर है उन्हें पार कर जाते हैं। हिंदी प्रेमचंद के उपन्यासों में तिन परास्त्रियता का भिन्न हुआ है के दोस्त वही की परास्त्रियता हैं, की लघुरी बाबूँक सामाजिक और पौराणिक पान्न्यासियों के युगों है बुद्धी गई हैं। उनके घर में पड़कर, पत्र की उपर पाने के लिए, हाथ पाप मारना फ़ूटता है। उसे गहरा खंडण करना पड़ता है। खंडण के तालमेल यह है कि प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के लिए जीवन का विशाल पृत्र बुका है। वास्तविक परास्त्रियताओं का निर्माण किया है और उन परास्त्रियताओं में शंकृत हैं बुकरे हर पत्र की रक्षा है। ऐसी रीतित में प्रेमचंद ने उपन्यासों की जौ आया उसके हिंदी उपन्यास परिपरण की एक नई स्थल और उलझन निकल परम्परा की और बड़हु जताहुर हुई है।

आचार्य नंदेश्वर ने लिखा है - "प्रेमचंद एक विशाल चौक के आठ पत्र करने वाले हैं। जीवन के उन्हें समस्त विस्तार में ग्रहण करने का उन्होंने प्रयत्न किया। वास्तविक जीवन पट छूट रहा है। निर्मित
है। प्रेमचंद ने कातिकय झूठे हुए एन्डों है जिसका क्षात्मक दृष्टिनिर्माण किया। वरिणामत: उनका निर्मित जीवन नित्र बैशिशी के महानु भेष्य के पृष्ठभंग से होकर भी व्यापक जीवन का आभास देता है। वाचार वाजपेयी ने उनकी विस लीरता और जीवन विश्लेष का उल्लेख किया है जो प्रेमचंद के उपन्यासों के संदर्भ में प्रत्येक पाठकों की रूपना के सम्बन्ध कर लेते हैं। इसके अधिकार पर प्रेमचंद की रूप-परिकल्पना का वाक्य किया जा सकता है।

जीवन की यथार्थ सत्यता के बारे के लिए वाक्यकथा थी रूपन्युक्तिकृत चल्लिकार, नवीकरण और अभिनवता के स्थान पर पत्थरों का दृश्यमन्त्र, विश्लेषणीय चरित्रण, वास्तविक स्थायित्व (विकृति) का निर्माण तथा स्वामानार्थ शिराज की गृह्यता।

चरित्र गृह्यता यह ऐसी उपमा निर्माण है जो प्रेमचंद के दृश्यती परिवर्तनों की भावना के बारे में कहा है। प्रेमचंद के उपन्यासों के निर्माण का घटन इन्हीं पाठकों के हाथ होता है। प्रेमचंद ने स्वयं कहा है - "भेज उपन्यास को मानव रूपित का चित्र लेना है। मानव रूपित पर प्रकाश मानता है। उनके रूपमान को लोहना ही उपन्यास का शून्य तत्त्व है। चरित्र वे साहित्य को सोहेल सानत है। प्रेमचंद के उपन्यासकारों में नी छुए लोगों ने दृश्यतावृत्ति उत्पन्न किया है उपन्यासों का शून्य किया था, किन्तु उनकी रच-नाथों में क्षात्रिय सालकारता का अभाव था।

प्रेमचंद के दृश्य उपन्यासों में छुए वर्षे क्षात्रिय वो विश्वास फूँकते हैं, उनमें पाठकों की सी क्री नहीं है। इतने पाठ चरित्र नहीं बन सके हैं। क्षात्रियों और पाठकों से ऐसा सामान्य स्थापित नहीं हो पाया है जो उपन्यासों को खीरता प्रकाश करता है। प्रेमचंद ने पहली बार क्षात्रिय और चरित्रों का सामान्य स्थापित किया। क्री हर रात का उलेख किया जा बुका है कि प्रेमचंद के चरित्र वास्तविक जीवन के व्याकुल थे, इसलिए पाठकीय स्वरूप द्वारा उनका बेहतर वार्तकी ने बेहतर जाना था। वह पाठक पहले की तरह व्यार्थ की खुल धूल बुल्ला में जो तिरस्सी जापुरी उपन्यासों की विशेषता
वह अपने की उठफुट नहीं कहता था। नवीन परिस्थितियों के फलस्वरूप उत्पन्न समस्याओं को, जिनका सामना उसे स्वयं करना पड़ रहा था, वह उपन्यासों में देखने का आरोपण था। नेहरू ने अपने चरित्रों को परिस्थितियों में डालकर पतनों के वात प्रतिपाद के उपन्यासों का लाना बनाया बुद्धि है। इसलिए नेहरू ने उपन्यासों के वस्तु विवरण के पूर्व में दो वस्तुओं पिलाई पृष्ठी हैं - परिस्थितियाँ और चरित्र। परिस्थितियों के प्रति चरित्रों की जो प्रतिक्रियाएँ होती हैं उन्हें उपन्यास का कथानक जारी करता है। नेहरू के चरित्र अपने समय के सामाजिक, राष्ट्रीय चर्चाओं में लोटे हुए हैं। इसलिए वे जीवन की ऑफिस गढ़वाल के नामों, अर्थी, अर्थिक, सामाजिक राष्ट्रीय जीवन - सबसे ही सम्बन्ध हो जाते हैं। इस तरह उनके उपन्यासों में एक प्रकार की सुनिश्चितता जा जाती है।

नेहरू के उपन्यासों के अनुसार भारत में अक्सर कहा जाता है कि यह की दुर्घट है वे सामाजिक पूर्णता और जातीयता है। यदि आम रूप से शास्त्रीय का नोट पृष्ठी जाये तो गौरवन की होशुकर उनके बन्य उपन्यासों की "वेल चेह रहे ग्रन्थ कहा जा कहता है। इस दृष्टि से पृष्ठी: नेहरू के दो उपन्यासों में जिन परिस्थितियों, पटनों और चरित्रों का बुद्धि किया गया है उसके सामाजिक, राष्ट्रीय जीवन का सम्बन्ध है। यह खास चरण कैन ने उनके संबंध में है - "वह फर्स्ट भारतवासी था। अपने उपन्यास कहानियों में उन्होंने सावधान मोटे राम शास्त्री की "सत्यमुख" और कुछ दूसरी कहानियों को होशुकर हमेशा "आर्थिकविज्ञान" का पत्थर फड़ा रखता। भरा उनके वह समय में विरोध था। में कहता था कि उपन्यास कहानी के साथ हें हमें ले, वहाँ देखरेख या कृपुल बनने की कसरत नहीं, कहानिया जबर्दस्ती तस्करी हैं के जिन्दी कहानियों का कथा है। उनका कहना था कि कहानी लिखी जाती है दिल्ली स्पी के लिए और रिलायन्स के लिए। भरा कहता था, कहानी दिल्ली स्पी के लिए कर रही जाती है, उसके दिल की
सूर वृत्तिका कहानी का लघु पहला काम है। हो सकता है कि आपकी धूम तद्वादार का चेतना के बाद कहानी के समय से, दारिद्र मगर, पीड़ा, नीति, आदेश, वातावरण दृष्टि की कहानियों के भी मिलती है। दारिद्र इन सब बातों के जवाब में उन्हींने एक धांधली पारंपरी की विशेष दी थी। जिसका फल था फिर, हिंदुस्तान की फिजवाद प्रेक्षण की कहानियों की जब्त है, द मोराला और अनुत्तम चेहरों की नहीं।

उपर्युक्त उदारण के यह स्पष्ट है कि प्रेक्षण ने पाठकों

लीलाका का बाराण म्यान रखा है। उनके प्रारूढ़ उपन्यास क्या समु

जाति विक्रम वातावरण तथा देश काल आदि की दृष्टि है वर्तमान आदि है।

जिस समय वे उपन्यास अपने गर्भ में पारिवारिक राजस्वार्थी तथा

राजस्वी सीता-नीति एवं एक फूड की व्यस्था और शासकों में नियंत्रण थी।

किसी नवीन वारसर्वकामों के फलस्वरूप जो परिवर्तन आ रहे थे वे

क्यास की प्रारती ज्ञाता के अनुभूत नहीं थे। प्रेक्षण का विचार था कि बुद्ध

कुलार परिवार के कारण समाज में विवेकित वातावरण पैदा किया जा सकता

था। इस संयुक्त व्यस्था कार्य कारण संबंध आदि की देश बदल गया

व्यस्था पारिवारिक व्यस्था दूढ़ रही थी। अपने इसों

विचार के कारण देश फूड और गबन पाठ की लीलाका के बहुत कुल

फूट। और पाठकों ने उन्हें बहुत पसंद दी किया।

सन् १८३६ के अवसादः पाठ की लीलाका बहुत बुद्ध परिवर्तित

हो गई थी। हवाहव के अंतिम उपन्यास गोदान के क्षेत्र और

विचार दोनों का पर्याप्त दिया। उनकी आदर्शवादी ज्ञाता दृष्टि का

केंद्र यादविकाली रह गयी। उस समय पारिवारिक व्यस्था दूढ़ रही थी।

राज्य और गबन का पैदा बहुत खुश बढ़ गया था। पिस्टा धूम के संबंधों में अंतर

--------

1. प्रेक्षण स्मृति, पु. ४२
वा गया था। क्रमवर्ती के लिए वायव्यक्त या कि गौराण तिलक के समय अपना
दूरान अन्दाज बात को। गौराण का रूप विन्यास विलित-विलिता भावना
पृथक है। वह यूं ही नहीं है। गौराण के संवंत में धारोप लागा जाता
है कि इसका उपयुक्त विन्यास यथार्थप्रत्यक्ष नहीं है। उससे शहर की क्रम
कला है गांव की क्रम कला है। क्षात्रों का अवसर दो मिलने संस्कृतियों का
अवसर है। क्रमवर्ती स्वयं गांव में पैदा हुए वे तेलिङ्ग शहर के साथ उनका गहरा
संबंध था। वहां भी वे खूब: गांव की संस्कृति का ही प्रतिनिधित्व करते
थे। हालाँकि शहर के संवंत में चाहे प्रशंसक भेदता का स्वागत हो अपना
भिन्न पालती की भुकंता। सब खूब मिलकर मेलोद्रामा हो जाता है।

जहांतक गांव की क्रम का संबंध है उससे पाठकी श्रीमदना का
प्रभाव देशा जा सकता है। चाहे चिरंज प्रिसन हो बाहे दृश्याक्षण। सकरे
पीछे यथार्थता को खुलकिय दिलार फूल है जहां पिछे उपन्यासों का यथार्थता
है मिलन है। यह मिलन नयी पाठकी श्रीमदना के साथ संबंध की जा सकती
है। इस उपन्यास के पूर्व गौराण अपने पाँच वात के विश्वास नहीं कर सकता था।
यह विश्वास खूब पीढ़ी का विश्वास है। बाहे तो बीजन के प्रत्येक पीढ़ी में यह
पीढ़ी के बाहे विश्वास के अतिरिक्त और खूब बाहरी हो नहीं। इस उपन्यास के
तरीकों के जो पारस्परिक संबंध है वे भी खुदें हुए है। क्रमवर्ती के बाद उपन्यास
की विश्वासत्व और रूप शिल्प दोनों में विविध, विस्तार और पारिवर्तन वापस।
मुख्यः इस समय विमूल्य खंड के अपर मार्कर के बन्धात्मक मौलिकताव, प्राकृत
मनोविशेषण और योनिवाद का कारण प्रभाव पृथक। क्रमवर्ती के खंड में
परस्पर और बाहरी का हत्या अवस्था गायन था जब नये वाचारक और वैयक्तिक
पूर्वको को बाहरीता के धारावत पर नहीं देखा जा सकता था। प्राकृत ने
पैठन मन के स्थान पर कैसा मन की वस्ती बाहरी के जो विशेषता किया
उसका प्रभाव आपत्ति कार्यकारी सिद्ध हुआ। प्राकृत की बाहरी को बाहरी
लोगों ने पूर्णतः न स्पीकार किया हो जैसे पूर्ण मानवा के संबंध में उसकी
प्रकृति के समय के परम्परागत नैतिक मूल्य पुराने पहुँच गए थे। प्रमुखदौर स्थानीय उपन्यासकारों
ने नैतिक मूल्यों पर काम किया। अब उपन्यासकारों का ध्यान समाज पर उन्नत न होकर व्यक्ति पर केन्द्रित हो गया।

जैसा कि कोई भी चुका है कि उपन्यासकारों ने अपने को मुस्कत: व्यक्ति में केन्द्रित कर दिया था। इसका प्रमुख यह हुआ कि व्यक्ति बाह्य
चरित्र सारी कथा का केन्द्रित हो गया। इसके पारंपरिक पहले कथा का
महत्व होता था और चरित्र उसके लंबे के रूप में चित्रित किया जाता था।
वीर का चरित्र कथा का नियामक हो गया। पत्रों के सीढ़ी की गतियाँ
कथा को रूप देती हैं। पहले की स्थान का महत्व गौरव हो गया।
कथा के स्थान पर मानवीय मन का विशेषता उपन्यासका का मुख्य छवि बन
गया। पहले के उपन्यासों में व्यक्ति वीर समाज का संघर्ष उभर करके चित्रित
किया जाता था। अब भूमिका का अंतः संघर्ष, उसका अंतःर्गत, उसके
व्यक्तित्व का अनुसार विवश्चितों के वृत्तांत वादि का वाक्षणण वापिक
हो गया। जैन-धार्मिक वृत्ति और चैत्य के उपन्यासों में वही तरह के
अंतर अपनी कथा-कथा विशेषताओं के साथ वर्णित हुए हैं।

वाचार्य नन्द हुआरे वाज्योत्तर ने जैन-धार्मिक के उपन्यासों के संघर्ष में
अपने विशेषत्व व्यक्त करते हुए दिखा है—सब होते हुए भी जैन-धार्मिक की की
रचना शैक्षणिक में पौशकेतिक है। परिस्थित वाचार्य और भावुकाध्य वाचार्य
के कारण उनकी रचनाओं में स्थल अनुसार वाचकों ने। उनकी शैक्षणिक में
शैक्षणिक वीर नारे हैं और आदि आदि ज्ञात होकर व्यवहार नहीं
कर रहे हैं तो पवन है कि वामको उनकी कोई दुस्ति दिलाई नहीं देती। यह
जैन-धार्मिक की नर्तकी का ही सामान्य है कि वे भूमिका शैक्षणिक नारी के
प्रति उत्सुक सहायता की दुष्प्रकारी होते और वादि है क्या उसमें कुछ
नहीं होने देते। अवस्था वीर रहस्य के काम है। हमारी कारण
बुद्धि की मुझे बुझाते हैं। यह उनकी शक्ति है किन्तु दूसरी दृष्टि से यही उनकी दुखी है। बाजपेयी की कथा के रूप में यह अत्यन्त भ्रमकाय पाठकीय शैली बनी हुई है। एक विचार में जिस उच्चस्तरीय शारीरिकता अनोखे वाक्यरूप आदि की चर्चा गई है वे बैनेन्ड्रा के उपन्यासों के राष्ट्रीय पता का साधन करते हैं। इस वातावरण की जीवन और मानसिक संगठनों की मुख्ता: नारी की दूरें ही व्यक्त किया गया है।

बैनेन्ड्रा की नारी एक और परम्परागती संस्कारों बंधी है तो दूसरी है और परम्परा की ठोसना भी बाह्य है। इस तरह न वह परम्परा का पालन कर पाती है और न वह मूल्यों की न्यायपतिता कर पाने में ही भर्ती होती है वह पत्नी भी है और जीवन भी। एक और वह पति के प्रति भी भाषणकार रहना चाहती है दूसरी और जीवन के प्रति भी। उनके जीवन का यह बन्ध: संगठन उसे वीर-वीरी तौँटता है। बन्ध: संगठन की वह यात्रा को भेदंकर ही उनके उपन्यासों का ताना जाता बना बना है।

खतरे की ढील-ढील में रहस्यवृक्ष और दार्शनिकता का समावेश भी है गया। उनके जीवन उपन्यास दक्षिण प्राचीन भाषा है परिपूर्ण है। उसके दृष्टि की भारतीय व्यक्तित्व नहीं फिल पायी है। एक फल यह हुआ है कि चरित्र - चित्रण में एक तरह की व्यक्ति बन गयी है। उपन्यास में दक्षिण की उद्भास तक समावेश करके दिया है जिस कीमत तक वह जीवन की उद्भासित करता है। उसके बैनेन्ड्रा का दक्षिण प्रायः उन्हें सामाजिक घूम ते काट देता है। जिस रूप के पिल्ले इस चर्चा बैनेन्ड्रा करते हैं वह वही जीवन की व्यक्ति बन। यदि उनके उपन्यासों के वस्त्र विवाह की शासनी बन जाये तो उनमें उद्भास और वातावरण का समावेश मिलेगा।
वस्तु पुलक्तता की कगी के कारण उन्होंने बहुत बड़ा बोध किया है, बहुत बड़े पाठकों को लोग विचार करने के लिए हुमा बना दिया है और स्थाय के लिए वास्तविक का बहुत प्रभाव कर दिया है। वास्तविकता की रितकता की पूर्ति मन की सुन्दरता के विचार द्वारा की गई है। दूरी का ताता बना ब्राह्मण वृत्तांक और हरिवंश की काम सुन्दरता है बुना गया है।

त्याग पत्र की नातिका मूर्त्ता सुमदा और कल्याणी प्रत्येक सभी कुष्ठा है पीछा नहीं। व्यक्ति के कारण हैं संस्थान होने के कारण अनेकों के उपन्यासों में घटना व्यापारियों और प्रजनों की बहुतता के नए नहीं निदर्शित हैं। खलीमंत्व समाज के माध्यम से व्यक्ति को देखते हैं जनेन्द्र समाज को व्यक्ति के माध्यम से देखते हैं। अनेकों के लिए व्यक्ति स्वाधिक विदेशी होने वाली पूर्णता है। ऐसी स्थिति में अनेकों के व्यक्ति की पुर्णता लाँगदी हो जाती है। हिंदी के प्रवृत्त पाठकों ने जनेन्द्र की हस करी की ओर वार-बार सीमित किया है वाचार नन्द हुआ राजपौर्णि के एक स्थान पर विस्तार है। व्यक्तियों और पाठकों का विचार यह सब देशी स्वास्थ्य पर किया जाय जिससे सामाजिक नैतिकता का या प्रवृत्त व्यक्ति का कोई रंग न हो, और फिर यह अक्षर की बाये के पात्र और विचार सामाजिक व्यक्ति की कौनी घर न पर लोग चले जाए बल्कि उनके लिए सब प्रकार की बुद्धि होती है इस मनो महत्व मानने जाए, तो यह एक बलिदान कार्यार्थ माना होगा। प्रश्न होता है कि ऐसी सत्यार्थ का माना क्यों? इसके उदर में कहा जा सकता है कि इसी युग-विशेषता में परम्परा गत सारणाओं और सामाजिक वाद्यक के विरुद्ध विवेचन करने की आवश्यकता हो आती है और नये नैतिक दृष्टि का स्थान किया जा सकता है। ऐसे ज्ञातियों में कथाकार का यह कर्ता हो जाता है कि वह योग्यता सामाजिक दृष्टि के स्थान पर नये दृष्टि का निर्देश करे। परन्तु हमका यह कर्ता नहीं होता कि वे नये मूल्य और वाद्य स्थान ही कार्त्तिकिक और सामाजिक हों।
व्याकरणों की काम कुष्ठाओं को जैनन्द्र ने वार्षिक रसस्वाभाविक लेखन कर सामाजिक पर विलक्षण ध्यान नहीं दिया है। हमका फल यह हुआ है कि उनकी रचनाओं में स्वस्थ सामाजिक दृष्टि कहीं नहीं दिखाई पड़ती। पाठकों की ओर के अनेक क्रय और वस्त्र विम्यास पर प्रवृत्तिवाले लगाते हुए एक स्थान पर लिखा गया है - "हिन्दी की अवधारणा स्थिति में बाहर उन्हें महीना का पद है दिया जाये पर प्रायूप पाठक के कारण वे वहा संबंध है। देश जाये"।

जैनन्द्र ने एक प्रार का दर्शन जतन दिया है। पर वह बुद्धि विरोधी होने के कारण निर्यातित और संचालित नहीं है। पाठकों के एक वर्ग के लिए ऐसा भी था जो प्रायूप से वार्षिक कार्य झुंझ दिया। प्रार्थना की मात्र मन की दो पृष्ठ ही होती है। एक वार्षिक बीतन के सामूहिक चेतन।

सामूहिक चेतन के कहीं विषय गहरी पृष्ठ सामूहिक बीतन की होती है।

हरेम पुरातत्त्व विद्या आदिकार कार जीवन रहती है। छुंझ ने कष्ट बाराहप की संक्षिप्त दी है। शास्त्री जोशी ने अपने उपन्यासों में बहुत कुछ हस सामूहिक बीतन को उच्च करने की कोशिश की है। व्यापक प्रायूप के बीतन मन के सिद्धांत का उपयोग भी उन्होंने किया है। उन्होंने बीतन के दृष्टि विश्लेषण के माध्यम से व्यापक व्याकरण तथा सामाजिक दृष्टि को व्यक्त करने का प्रयास किया है। वे व्याकरण के बार जीवन और बालक जीवन में समन्वय स्थापित करना चाहते हैं।

हरेम चिंता के दृष्टि मूल साथीवाद साधनामत बीतन प्रेरित को अपनाने का प्रयास किया है। उनके उपन्यास के विशिष्ट माननीय प्रांव अवश्य और रूप है। हमका फल यह हुआ है कि उनकी क्षयकुश विश्लेषित और पाठ न्युरॉटिक हो गये हैं। भाषा बदले में दी वस्त्र यून पृथिवियों और उनके संस्कारों का प्रायूप मानव जीवन के विकास स्वभाव और आचरण पर बहुत दूर तक पड़ता है। वौषध्याध्यक्ष स्वयंदी निर्माण वर्तमान उपन्यासों का रूप विम्यास उनके आधार पर उनी विश्लेषित किया जा सकता है।
जोशी की के उपन्यासों में कथा विकास बहुत छ्व चरित्र वद्विवृत्तियों पर आधारित है । इन विवृत्तियों के कारण जी पात्र कृष्णाग्रस्त हो जाते हैं क्योंकि ग्रन्थियों के स्थल जाने पर फिर स्वस्थ हो जाते हैं । इस तरह के उपन्यासों में वायु घटनाओं और व्यापार संक्षेपों का बहुत कम महत्व होता है । उनके स्थान पर कौटुम मन में परिभाषित होने वाली प्रतियाँ का चित्रण प्रभाव होता है । स्वभाव की तरह घटनाओं का दूसरा है व्यवहार प्रतीत होती है । जब तरह स्वभाव की अवस्था घटनाओं की व्यवहारिक एवं इत्यादि है उसी प्रकार हन सिखी हुई घटनाओं की पट्टी की मन: विस्मातियों के संबंध में सब तात्पर्य प्राप्त की जाती है । कहीं-कहीं "षेषु-शिलो" के अरोप पर भी पट्टी की विनिर्मित्य को उद्धारित किया गया है । जोशी की के उपन्यासों में घटनाओं अरूपरूप हाँ अवस्था न हों। खिलू देते हैं मूल प्रत्ययाँ को उद्घाटन करने में क्षमता कस्स हैं । "परदे की रानी" और "वायुराय" में पात्र की अपना और की दूरी का मनोविश्लेषण करते हैं । "परदे की रानी" ने प्रतिक्षा एवं विशेष फ़ूल की मनोग्राहिता के कारण अपने सीन्द्रीवर और सम्पर्कों संबंध के द्वारा बुखार का विताह के गर्म में देखने है और जीवन की दूसरी प्रतिष्ठा की छपेट में है कैद रही है । अपनी वांछन की शीतला की हस्तक के पीछे उनकी दिग्गजीत है और अपने प्रेमी सम्बन्धों को देख है क्लिष्ट का वातावरण करने के लिए वात्स्य करती है । इन अवस्था घटनाओं का उद्देश्य पात्र की कृष्णाग्रस्त मनोविश्लेषित को विस्तार दर्शाता है ।

यहीं पर पैनेंड्र और जोशी के वस्तु स्वाभाविक पत्र का विपेक शी अभाव कैसा बनिए । पैनेंड्र के पात्रों की निर्मृक्का और संस्कृति शास्त्र के पीछे दार्शिक तत्त्व हैं । जोशी में इस प्रकार की दार्शिकता का कोई ज्ञान नहीं है । कौटुम मन की चीर फाड़ जाए तब उनके उपन्यासों की विशिष्ठ मनोविश्लेषणात्मक बना है जाता है ।
मनोविशेषणात्मक उपन्यासों की वर्ण परिणामतित कोई के
रेंकर एक जीवनी" में दिखाई देती है। अपने मौलिक दृष्टिकोण और शिल्प की गुणता के कारण हिंदी कथाकारों में कोई का विशिष्ट स्थान है।
रेंकर : एक जीवनी" के प्रभास ने हिंदी उपन्यास क्षेत्र में एक आवश्यकता की पूर्णता है। रेंकर एक जीवनी" को जोरदार हिंदी वादकों में प्रवृत्त किया था। इन फलंदाजों और विवादों के साथ काम करने पर वास्तव में वास्तविक धारक के लिए किसी परिणामति पर पहुँचना मुश्किल था। इन विभिन्न फलंदाजों के प्रभाव में पाठकीय कीवन के सम्बन्ध में भी दुख नहीं होना चाहिए था।
इन वादकों ने कोई को अत्यंत जागरूक माना तो दुख ने प्रतितियावरह अत्यंत जागरूक माना तो दुख ने प्रतितियावरह अत्यंत जागरूक माना तो दुख ने प्रतितियावरह अत्यंत जागरूक माना तो दुख ने प्रतितियावरह अत्यंत जागरूक माना तो दुख ने प्रतितियावरह 

कोई के इस उपन्यास को किस पाठकीय कीवन ने प्रतिपतित
किया? या निर्देश इस उपन्यास के लिए पाठकों की जो प्रतितियार आविरोध को परस्पर विरोधी स्था हथी। इन विरोधों को, पाठकीय कीवन की विभिन्नताओं की उस समय के पाठकीय धारक की सजाना आवश्यक होगा। यह पाठकीय धारक ने अपने वापस में दुख नहीं है। ये भूनी चूड़ान्त के लिए अव्यवस्थित रूप के सम्बन्ध है इसलिए पाठकीय कीवन पर विचार करते समय तत्कालीन दुख चूड़ान्त को दृष्टि में रखता आवश्यक होगा।

फ्राइट के मनोविशेषणक विभिन्नताओं के कारण पुरानी नैतिकता के बन्ध बहुत दुख दृष्टि फूल गए है। पाठकों का एक वर्ग गैसा था जो नैतिक नैतिक चूड़ान्त का विष्वासी बन गया था। किन्तु एक गैसा भी वर्ग था जो नैतिकता के पुराने रूप को शोक की पर रहा था। रेंकर भौतिक में पाठकीय कीवनांक अन्य-अन्य प्रतितियार के रूप में व्यक्त दुख है। प्रत्येक उपन्यास
की दूरी स्मृति का विचार मान लेना अवश्यक नहीं है। जोय ने स्वयं इस बात पर जौर दिया है। इस कार्य की मांग सामाजिक तत्व की गलत ढंग से पेश करने की मांग है। उन्होंने 'बातचीत पत्र' में दिखाई है - 'यह पत्र विशेष फ़ाक्टिवाइता का परिणाम है। इस कार्य के उपन्यास सामाजिक पाठकों के लिए नहीं होता। सामाजिक पाठक अपने संस्कारों में होता बंधा होता है कि नई मांगों को सही स्वीकार बनाए कर लेना उसके लिए समय नहीं है। कभी तक उपन्यासों को सामाजिक परिवेश में ही चित्रित किया जाता रहा है। सामाजिक परिवेश के व्यापक दृष्टि का अपना भी घर होता है। इस कार्य की जोय ने जीवन में कहा है। जीवन और सामाजिक में कई नौकरी कन्तर नहीं भाठा जा सकता। कृत्य के पास उसकी अगली जगह फनाैजानिक समस्तार होती है। वे समस्त उसे स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान करती है। जोय वैकिंस्का के इस पाठ में विशेष रूप से व्यक्त है।

हाओ नैन्द्र के पत्र में 'वनोड़री की तह में' कहता गहरा खुशने वाला क्षामार हिंदी उपन्यास में इससे प्रेयाना नहीं किया। अवाघाय नन्द इसी वाक्यात्मक का दर्शन है। 'रेशर - इस जीवन में' की दूसरा प्रेयाना क्षमान्विक है और वादशाहोंके। किन्तु जीवन के विकास के साथ उसका विचार यही होता है और अन्ध में जीवन - नात्क के कार्य बनता भी प्रतिकृतिवाद बन गया है। किसी स्वस्थ केन्द्र दे उसका लाभ नहीं रहा, किसी उन्न उदय के प्रति उसकी आस्था नहीं रही। इस विचारणा वातावरण की प्रृष्टि होती है, और जीवन का कोई दूसरा पाठक के हाथ नहीं लगा। अवस्था या दूर निहित बादशा में जो निगम अब चाहिए।

1. हाओ नैन्द्र - विचार और अनुभुति, पृ १५०
उसका क्याव ही ठेलक को इस स्थिति पर है गया है।

शेषक एक जीवनी को ढां नौंद्र और वाजपेयी जी दो विभिन्न गृहस्थों के देवाने हैं। दोनों के प्राचीन आदेशों की लेखनार्थ अपने-अपने स्थान पर रहे हैं। फिर ऐसे द्वारा पाठक को यो शोधकी शैली उपयुक्त है, जो इसकी शैली उपयुक्त देखी जा रही है। इस दौरान वेतनार्थ जोगी का नाम गुरुत्र रूप में उल्लिखित रहा है। शेषक एक जीवनी ने दो दशकों में अधिक का लक्ष्य पार कर के यह सिद्ध कर दिया है कि यह बिलासकर पाठकीय बीमार उसके कड़ियाँ हैं।

यह पुस्तक: जीवनी प्रकार उपयुक्त है। इसमें "वास्तव वेतनार्थ" की कैसल एक रात में देखे हुए दिवंग को लघु यदि करने का प्रयत्न है। ठेलक के ही शैली में यह "एक टाइप का व्यक्तित्व द्वारा विश्लेषित है। यह स्थूलत्वों में धारणा देता और जीता है। स्थूलता में जीना एक वात होती है और व्यक्तित्व उन्हें जीना दूरी वात। ठेलक अपनी स्थूलताओं का धारणा करता है। यह इसके बीच के तत्कालीन बीती अधिक समयक होगी उपयुक्त जीवन की उनी अधिक क्लास्टर का प्रभावित भील सकती है। कहना तो होगा कि शेषक एक जीवनी क्लास्टर दृष्टि से एक सादार रहता है।

फार्सी की शाखा में विगत जीवन के बाँधे में आत्म सादाराकार करना सहज कितने जालदिश समय है। सबह हवा कि यह साधन में मुख्य आत्म की धूरी समानता के साथ देखता और परिधान करता है। कठिन हवा कि यह निरीक्षण और परिधान की क्लास्टर का स्थान देने के लिए एक विशेष क्षेत्र की वैज्ञानिक तटस्थता की आवश्यकता होती है। शेषक एक जीवनी में परिधान की झटकारी और दृष्टिकोण की वैज्ञानिक तटस्थता है।
शेखर में तहसूल और विद्रोह का जो भाव है उसके बाद में सच्चाई की परिस्थितियाँ हैं। तहसूल ने दर्शिया सच्चाई की स्थितियाँ का गहराई में पैठ कर विशेषण किया है। विद्रोह के उपरांत दो शक्तियाँ का विशेष महत्व है - व्यापक श्रेष्ठ की सामर्थ्य और तदर्थ सार्थक धृढ़ता।

वस्तुतः: श्रेष्ठ धृढ़ता की क्षुद्र-उल्लम्ब नहीं किया जा सकता। परिस्थितियों के फलस्वरूप जिस व्यापक की जिन्दगी जीवन की गई है उसे उल्लम्ब ही अभिक धृढ़ता ही हो सकती है। यह मानवता की शेखर के बाहर और बिस्मेल जीवन के साथ संबंध नियामक है। विभिन्न परिस्थितियों और मानवता के विषय-विवाद में है शेखर की जीवन की वस्तुतः निष्ठा किया है।

जैसा कि ऊपर निर्देश किया जा चुका है शेखर: एक बीते, में शेखर के व्यक्तिगत जीवन की विशेषता इतनी है उल्लम्ब या उल्लम्ब है निवास: शेखर के बीते की है। खैर ये धर्मिक या बिना है - रेंदना इस शक्ति जो व्रति देती है जो यात्राओं में है, वह दृष्टि ही लक्ष्य है। यह बेडाना का व्यापक श्रेष्ठ के प्रति उसका श्रेष्ठ है। वस्तुतः: एक प्यार की जिन्दगी और बाहर सीमा जाता है उतना वह नहीं होता। यह व्यापक में एक स्थान पर शेखर ने झिल्ला है - रेंदना प्यार - प्यार पात्र - मूलत: एक समस्या है और दो दक्षताओं तक हेतु नहीं है।... बिना इस पक्ष के और दुल्हन मोटी और दुल्हन दौड़ में और बादः उस समस्या है उल्लम्ब है... प्यार एक भावना है, एक शक्ति है जिसके जीवन की स्थिति श्रीमति किया हो जाती है, यह विद्रोह की समस्या है अत्यंत यह व्यापक और विवाह, जीवन के स्वरूप है की वापसी पर - अवस्था घाटों पर। - यथा इस समस्या को टांग जाता है... तब तक... समस्या है जब तक कि उतना ही व्यापक सामाजिक फिर न हो शा समझा जाए... समस्या है और पात्र है, तपस्या है... हर जानालेखों की और गहन समस्याओं की जीवांत आधार पर अवस्था प्रभाव पर निर्भर व्यापार समझौता का प्रयास किया गया है। यद्यपि वेदांत नहीं बौद्धिक भी हो जाता है और उसका चर्चा और विवाह की व्यापारिक कहीं विवाहित लक्ष्मी कहीं विवाहित और कहीं पर रहता बिनावास
हो जाता है। इन सभी शैतियों को इस तरह के विद्वान ने विन्यस्त किया गया है कि सारा उपन्यास एक अभिनव शिल्प की शीर्षा है वास्तविक हो उठा है।

ाचार्य हजारीप्रसाद दिवेदी का उपन्यास 'वाणमट्ट की आत्मकथा' सन १९४६ में प्रकाशित हुई। इसके पहले ही उन्होंने हिंदी साहित्य की धृष्टि की दृष्टिकोण बोध की अंतर्गत वैदिक खोज का परिबंधन किया था। इस नयी दृष्टि में वैदिक खोज का पाठ्यक्रम बदल दिया गया। इसके अतिरिक्त दृष्टि के फलस्वरूप वाणमट्ट की आत्मकथा में दुराने परिवेश की अवलोकन दृष्टि से प्रस्तुत किया गया। इसमें मध्यकालीन जुड़ते पर प्रशार करते हुए जीवन की नींद हलचल और उसकी सार्वजनिकता को विविधता किया गया। जिस विश्लेषण काल पर इस जीवन को उंगरित किया गया था वह अवस्तु वाणमट्ट की वृन्दा वास्तविकता है। इसके अतिरिक्त का अथवा पाठ्यक्रम के संबंध में जो पाठकों की हजारों हैं उनके प्रकाशन के समय उन्हें आत्मकथा कायम रखने का मन मिलता है। वे यह जानते हैं कि उन कार्य की संख्या खोजता को प्रस्तुत करने वाले यह उपन्यास काल्पनिक है। नाथिन विलियम्स ने इसके लिए जो प्रतिकृतिया व्यक्त कराते हुए वाण भोले आत्मकथा का यही सम्बन्ध आत्मकथा की श्रैणी व वाण भोले में दील पूरा है। वाण की आत्मकथा का वृत्तिक वृत्तिक गति-श्रैणी के बदले है वृत्तिक वृत्तिक के अनुरूप गति का ही बि.दी.का बालर भोले की याद दिखाते रहने में सफल हुआ है। स्वयं भोले, बच्चे सारे पालिकापुरस्त-प्रशिक्षा के रहते हुए पैदा हो जाती, माता-पिता परिवार का द्रुत गति तथा ज्ञानकृति है विविधता सत्यानयुक्त वाण भोले के सम्बन्ध वो तथ्य में उम्मक नहीं है। गति की यह चर चुकता, दिवेदी जी की श्रैणी की वाण प्रतिकृति विशेषता है।

एक इसे प्रस्तुत पाठक प्रभाव उपन्यास ने अपनी आत्मकथा व्यक्त करते हुए शिष्य है - 'श्री दिवेदी जी ने क्रीत को निवास देना चाहता है उसमें के जीवन आश्चर्य सुक्त हुए हैं। प्राचीन विश्वास वर्तमान की लोकल
रख देना सामाजिक प्राप्ति का एक रूप है और इसी कारण मानव तृप्ति है। नैनी दोनों ने बातचीत की क्रिया को सराहा था। हां, हम जानते हैं कि केवल उस लोग देना ही भयाप्त नहीं है, उसे प्रयास निष्पादित हो जाता है, आवश्यकता होती है यह बात की कि उस क़ीमत के स्तर निर्धारण में बदते दिलाये जा सके जिससे उस क़ीमत के प्रकार के भीतर या बाहर भविष्य तक विचित्रित न हो सके। इस स्थिति मुन्द्र क़ृति की जिसे ‘हृदयचरित कादम्बरी’, ‘नागाण्डा’, ‘रत्नाकरी’, चण्डीदास के आदि ने उपकरणों के द्वारे जो निर्मित किया है हम दूर है कुछ विश्वास के साथ देखते हैं और उसे अपनाया कहीं फ़्राइ कहीं बोल जाते हैं।

बन दोनों प्रकार के पर विचार करने हे पता लगाता है कि इस दोनों तक दोनों में अंतर है। किंतु बुध हूँ यह तक दोनों यह दूसरी की स्वरूपी विश्वास पूर्ण है। ऐसा यह तथ्य कहता है कि ऐसा यह है विश्वास और मनोभाव की वह में वह जाता है और इससे पाठक यह विश्वास के साथ देखते हुए भी अपने मन का लम्भा स्वप्न कर नहीं कर पाता। वस्तुतः पाठक भी दोनों के संदर्भ में कहते हैं। पहली प्रकार जहाँ बाबुस्वरूप है वहाँ दूसरी वास-ग्रस्त। हम उपयोग में दिब्य प्रकाश जी ने मथ्यकालीन ब्रजी पर निष्पादक प्रकार नहीं किया है। बल्कि उसी जीवन के आधुनिक जीवन के ऊपर और हृदय शृंखला पर विचारकर ग्रस्त नहीं किया है। मथ्यकालीन संस्कृति का समाधान विस्तुत करने के लिए वास-ग्रस्त या हस्तक्षेप कार्यक्षेत्र होता। किंतु वही विद्या ने भावना यह बुध रोमांटिक भी कर देता है। फिर एक ही बुध और विन्यास दोनों में बज्जा संयम है।

जिस प्रकार दिव्य प्रकाश जी अपने निर्देशों में बहुत है संदर्भ परिप्रेक्षण करते हैं उसी प्रकार हरिहार जी प्रामाणिकता के लिए हमें आदर्श संदर्भ की केंद्रित किया गया है। वाणिज्यकाल के आदर्श के लिए आदर्शक के लिए वाणिज्यकाल की बात बनाया जाती। कन्या कुमारी प्रामाणिकता संदर्भ हो जाती। हस्तक्षेप और विन्यास द्वारा पूर्ण है उसमें स
भारतीय संस्कृति के वैकासिक आयाम उजागर हुए हैं। नृत्य संगीत पुरविकला आदि के जो वर्णन बारे हैं उनमें जीवन की गत्यात्मकता पूर्ण हो उठी है।
कुछ लोगों ने इसकी रौही को बुद्धिमूलक कहा है। जीव की रूपित में हमारा देश एक विशेष प्रशासन के आर्योत्तरिक आध्यात्मिक संकट बौध का अनुभव कर रहा है। वह अधूरा है। यह उपन्यास के माध्यम से दिखाई जा नै जीवन की जिस सारीकरण को चित्रित किया है वह जीव के संरक्षण में भी मूल्यवान है।

उपन्यास मनोद्वालात्मिक और सांस्कृतिक उपन्यासों के तत्त्वीक प्रभाव परम्परा के उपन्यास की रचना जा रही है। यह परम्परा में भावस्त वर्तमान, यमोदा, राजशाही नागर और उपन्यास नाच भरक मात्र है।
वसंत: प्रख्यात्रु के बाद जीवन का यथार्थ बहुत ज्यादा बदल चुका है और इन उपन्यासकारों ने बदले उन्हें यथार्थ को ही अपने उपन्यासों में चित्रित किया।
यस शिल्प के वृत्तिक के हिंदी प्रेमकंद की परम्परा का ही उपन्यासकार कहा जा सकता है। प्रख्यात्रु के "गापदान" की ही माति वर्णी बी में "टेरह-पाठी रासी और "छह बिखेरे चित्र" में व्याकरण फलक को देने का प्रयास किया है।
यस उपन्यास पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए नेहरून्नाट्च बाई जो रचित है - "कुछ मिला कर जूझे बिखेरे चित्र" उपन्यासों के विकास का विनिमय मात्रवाक सम्बन्धित नए व्याकरण की उपस्थिति पर बोध देता है। उसे पुनः समाप्त करने पर, बढ़ी रचना को केलेने का या बिना उत्तर वन में पर जाना है। जिसी परिस्थिति है विकल लीक की होती है। यह उपन्यास हस बात का प्रकाश है कि बढ़ी रचना की महत्वकांडा मात्र है बढ़ी रचना नहीं होती। उसके रूप में विनाशकांड विकास के धारा-साध दृष्टि, सशान्दृष्टि और बौध की व्याकरण और गहराई दोनों की ही विनाशकांड रूप से आवश्यकता होती है।

यह महत्त्वकांड उपन्यास में रैला चित्रों की मस्तार है। ये रैला चित्र कहीं-कहीं गतिपूर्वक थे है किन्तु वे जीवन की कौशल्यता वर्तमान
बफ्ता उलाव उमार पहुँचे में असर है। कृत्तिलाल नागर का खुंटू और खुंटू
पटनाई का बुना गया है। जो बरित्त हसने आते हैं वे अपनी पराप्तियाँ
में तथा उनकी श्वस्यांजी है खुंटूरे खुंटूरे दिखायी पड़ते हैं। यह दृष्टि है यह
क्षेत्र की परम्परा का उपन्यास उहरता है। हसने बंदों में पाठकों की जो
प्रतिक्रियायें आयी हैं वे हसने पत्ता में हैं। प्रकाश की मारति ही कृत्तिलाल नागर
के उपन्यासों में पी कथा का रूप लक्ष्मणिता है। फिर दृष्टि है
कृत्तिलाल नागर लाट्टालाम मचाखान कारकर हैं। यह उपन्यास में उन्होंने पटनाई के
और चारसों को खुंटू खुंटू संयुक्त किया है फिर इसके बाद एक उलाव उमार
चलते हैं। नागर जी ने चारसों को पूरी अवश्यकता और खलवता दी है।
घैंजीय पुस्तक के बुट के कारण उपन्यास की सजीवता और भी बढ़ गई है।
पाठकों की दृष्टि में यह युद्धार हिंदी उपन्यास के सक वशक दृष्टि माना
गया है।

पहले कहा जा चुका है कि यशपाल जी प्रकाश की परम्परा के
उपन्यासकार उलाव्य हैं। उनके माता-पिता के दृष्टि को संपूर्ण वृत्ति
की गौरव की परम्परा की जारी कृति में माना जा सकता है। यहाँ तो उनके बाहर है उपन्यास
के बारे हैं किन्तु "दूरा खुंटू" का अपना महत्त्व है। "दूरा खुंटू" के संबंध में
जो पाठककर प्रतिक्रियायें आयी हैं वे दो प्रकार की हैं एक वह जो मानना
के बाद बने दस के उपन्यासों की सजीवता में पूर्णता में चित्रित करते रहा यह
दूरा उपन्यास है। दूरा एक वह जो मानना विषयी ही उलाव के संबंध में
अवलंबी किया गया है। साधारणतया पाठकों के हसने करते हुए उलावत्य के उपन्यास "युद्ध और शांति" को प्रथा किया है।
किन्तु दोनों में बहुत बदलता है। "युद्ध और शांति" का फँसक तो व्यापक है
ही उसके क्षीण संचालक भी का महत्वपूर्ण नहीं है। यशपाल के बाद
उपन्यास में न तो जीवन का उल्लंघ विषयक है और न तारामी की
गहराई। फिर भी देश के खिलाफ के बारे पर खिला गया यह उपन्यास
महत्वपूर्ण है इसमें कोई नदी नहीं है। खिलाफ के फँसक कोचकों वार्तिक
पौड़ी और सांस्कृतिक सजीवता उठ सकी होती है। इन सजीवताओं को खींचने
कथा प्रसंगों के छूटों है गूँधा गया है । कथा कहने का ढंग यशपाल का अनोखा है । लुटाके सह में कथा का अखूद रस फिरता है । स्थान - स्थान पर रुकते हुए तीस व्यायाम समाज में बड़े कहे जाने वाले होगा का पदराष्ट्र कर देते हैं ।

अब प्रबंध की परम्परा के श्रीये अवश्य हें । उन्हीं अपने उपन्यासों में प्रायः मध्यवर्ती जीवन को चित्रित करने का प्रयास किया है ।

हस दुभाष्ट है उनका उपन्यास 'गिरी प्रारंभी' विशेष रूप से खरी लिखा है । इस उपन्यास में बैचने के पावन के मध्यवर्ती जीवन की अपनी उपन्यासों प्रशंसक विश्वासवादी और योन्त्र किसानों को चित्रित किया गया है । इस उपन्यास के संबंध में जो पाठकों सीमाओं रही हैं है प्रायः इसके शिक्षण के संबंध में प्रशंसक 'दुभाष्टकोण' व्यक्त करते हैं । इसके प्रभाव का अधारणा नाटकीय ढंग से होता है । बैचने के जीवन के अनेकाधिक पत्रकारों को बहुत दे सब चित्रों में विभिन्न दिखाया है । ये भी विभिन्न दुभाष्ट पत्र एक क्रूर और नीतिवंत चित्र प्रस्तुत करते हैं । यथार्थ का रंग है बताने के लिए उन्हीं ने स्थान-स्थान पर बाजारों, वस्त्रालों गृही दुबारों, भीड़ माड़ आदि के संग्रह प्रस्तुत किए हैं । स्थान स्थान पर जैसे व्यायाम है भी काम किया गया है । पूर्ण स्वतंत्र और बैचने प्रकाश के माध्यम से बहुत बैचने के काल को बताने में सफल की है वहां ही जो क्रांति का विवाद भी पेश रहा है । कहीं-कहीं पर वह विवाद कथा संगठन को बहुत दीवार बना देता है ।

पिछे वाष्पों में आचार्य उपन्यासों की चर्चा की गई है - विशेष रूप से फर्नस्कर नाथ रेणू के मैथा बांचल की । इस उपन्यास के संबंध में पाठकों में जो प्रादर्शित्विय म्यक की वे अच्छे दुबारे भी हैं और प्रतिक्रिया भी । प्रायः मैथा बांचल का स्थान ही किया गया । इसके कल्याण रेणू ने हमी पेटी दुर्गा उपन्यास बांचल की तरह इसका स्वागत नहीं दी । मैथा बांचल के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए गिरिराज ने जुका 'गिरीश' के लिए है । रेणू मैथा बांचल की और कोई भी कोई कोई क्षति का क्षतिक प्रकाश नहीं कह सकते । बांचल प्रस्तावित करने
वाहे वात्सर्गक तत्त्वों का तो उसमें अभाव ही हो, उसमें छोटे पराक तत्त्वों का नीचा उचित विचार नहीं हो, शायद ग्रामीण ज्ञान के नाम पर, अर्क-मुख्य वृष्टि उपक्रमों की योजना ती बनाई गई है, परन्तु धृतराशी के साथ उनका संबंध निर्वाचित किया गया है, इसकी ओर ध्यान नहीं दिया गया है, पूरा धार्मिक के मुाज दृष्टि से संबंध न बनाए वाहे गदी तत्त्वों की तरह है उपक्रमों वित्त चिन विराज उत्पाद करने वाहे हो गयी है।

एक दूसरे वात्सर्गक - नेपाल देश ने मेला अपनी के कब्रित्व वृष्टि खुदा है। उसके वात्सर्गक जीवन के सत्य की फलने के लिए धार्मिक कर यही दृष्टि अपनित्व होती है। मेला अपनी के दृष्टि की धनरता और बहुविध अंतरिक्ष के प्रायर है। उसकी ध्यान और पहचान के प्रायर है। जीवन के बहुविध अंतरिक्ष को उपरान्त के लिए एक एक जोत के ध्यान की विशेषताओं की उमारने के लिए व्यक्ति ने खगड़ा नवीन धिल्ल का प्रयोग किया है। उसके धिल्ल का उल्लेख करते हुए नेपाल ने खिला है - तीक्तक भाषा के बारे में कही गई है वही ध्यान उपन्यास के धिल्ल के बारे में कही है। उसके धिल्ल में नवीनता है। विभिन्न धार्मिक मानवों, मनोदशाओं और पत्नियों को तथा बहुल द्वारा ध्यान के बाह्य और मानवीयों की कर नवीन धिल्ल के बाहर भेद की धार्मिक को निर्देशक नहीं है। धार्मिक ध्यानों के बाहर भेद की धार्मिक को निर्देशक नहीं है, धार्मिक ध्यानों के बाहर भेद की धार्मिक को निर्देशक नहीं है।

उपन्यास को फिल्म वेब बनाने के लिए धार्मिक ध्यान विशेष की होली कहां की मानविक, धार्मिक विशेषताओं, और साथियों का उल्लेख किया गया है। उस कथा के प्रारंभिक शौक कथाओं और लोक गीतों के तरह एक उपन्यास की घरस्ता में योग किया है। धिल्ल की यह नवीनता
पाठकों को अत्यधिक शारीराक्ष्यावर्षक लगी। किन्नू जीवनावधीत की गहराई के प्रभाव में पाठकों ने वापसिया भी उठायी। आवश्यक उपन्यास की अपनी एक रीति होती है। वह उस रीति के बाहर नहीं जा पाता। ऐसी स्थिति में वह एक देशीय होकर रह जाता है। मनकर: इसी लिए इस प्रकार के उपन्यासों का अधिक विकास नहीं हो पाया।

उपयुक्त विस्तारण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि पाठकीय खेल्लना और उपन्यास के रूप विन्यास में शीर्षा संवंच तो नहीं है फिर भी दोनों को अस्ताब्द नहीं मानना जा सकता। पाठकीय खेल्लना और ध्वनि वैश्विता का जो गहरा संवंच होता है उसे शेष्कीय दुस्परिक्षण के साथ सहव में ही जोड़ा जा सकता है। कहीं न कहीं उपन्यास तील के साथ पाठक के रहता ही है। ऐसी स्थिति में उसके दुस्परिक्षण का निर्माण पाठकीय खेल्लना यानी ध्वनि वैश्विता होता है। कहना न होगा कि उपन्यास का धूपावरूप विन्यास शेष्कीय दुस्परिक्षण पर ही आधारित होता है।